Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 9 ~ Issue 5 (2021)pp: 38-46
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

सीरिया के इतिहास एवं वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना

शोधार्थिनी — पर्यवेक्षिका

रचना चौधरी — डॉ. अन्जू शर्मा(असिस्टेंट प्रोफेसर)

समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग
समाजशास्त्र संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग (आगरा)

सार— सीरिया आधिकारिक रूप से दक्षिण–पश्चिम का देश है जो भूमध्य सागर के किनारे पर स्थित है। वर्तमान समय में सीरिया आन्तरिक गृहयुद्ध से गुजर रहा है। यह आन्तरिक विद्रोह उस समय शुरू हुआ जब कुछ विरोधियों ने तत्कालिक राष्ट्रपति बशर–अल–असद की सरकार का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। सीरिया में असद वंश की सरकार है जो 1970 से सीरिया में शासन कर रही है। एक ही दल द्वारा इतना लम्बा कार्यकाल रहने से लोगों में असंतोष की भावना का जन्म हुआ जो आन्तरिक विद्रोह में परिवर्तित हो गया। सीरिया की अशान्ति का लाभ उठाकर 2013 के अंत में आतंकी संगठन आई.एस.आई.एस ने सीरिया में अपना वर्चश्व स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप विद्रोह ने भयानक रूप ले लिया जिसके कारण सीरिया की जनता पलायन कर पडोसी देश तथा अन्य यूरोपियन देशों में शरण लेने लगी जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शरणार्थी संकट की समस्या का जन्म हुआ।

मुख्य बिन्दु— सीरिया, गृहयुद्ध, आई.एस.आई.एस, शरणार्थी संकट।

Received 26 April, 2021; Revised: 08 May, 2021; Accepted 10 May, 2021 © The author(s) 2021. Published with open access at www.questjournals.org

साहित्य का अवलोकन–

- Ferris & kirisei (2015) इस पुस्तक में लेखक के द्वारा सीरिया में जो आन्तरिक अशान्ति उत्पन्न हुई है उसका उल्लेख किया गया है। इन्होने बताया है कि वर्तमान में सीरिया की परिस्थितियां ऐसी है जिसके कारण लोगों का पलायन लगातार बढता जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस समस्या को समाधान तक ले जाना जटिल होता जा रहा है। इनके अनुसार सन् 2015 के आस–पास अगर इस विद्रोह का प्रभाव देखा गया है तो वो है यूरोप के देश जिनमें अधिक संख्या में शरणार्थी शरण लेने पहुचे।

- Srivastav (2016) प्रस्तुत लेख में वर्णित किया गया है कि इस समय सीरिया का संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे बडी घटना है क्योंकि इस संकट से बचने के लिए सीरिया की जनता यूरोप के देशों जैसे इटली, तुर्की में पहुचने लगी और इसके परिणामस्वरूप मानव तस्कर समूह भी छोटे छोटे बच्चों को बहुत आसानी से अपनी पकड में करने लगे जो एक और जटिल समस्या के रूप में सामने आने लगी।
- Eid (2018) अपनी इस पुस्तक में लेखक ने असद द्वारा सीरिया में रासायनिक हमलों को वर्णित किया है और इन्होने ये सवाल उठाया कि आखिर अपने ही देश की जनता पर रासायनिक सामग्री का इस्तेमाल क्यों किया गया? आगे ये बताते हैं कि जब ये हमले सीरिया के शहर दमिश्क में हुए थे तब वो खुद दमिश्क में ही थे और उन्होने लोगों को इन हमलों में घायल और मरते देखा।

प्रस्तावना – प्रथम विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद सीरिया में ओटोमन साम्राज्य का अंत हुआ जिसके साथ मध्य पूर्व के कई देशों की तरह सीरिया में अपनी सीमाओं के कारण ब्रिटिश, फ्रांसीसी तथा अमेरिकी अनियमितताओं का हस्तक्षेप रहा है। उस समय सीरिया का क्षेत्र जिसमें लेबनॉन, इजराइल एवं जॉर्डन को शामिल किया जाता था। सीरिया के संविधान के अनुसार वहॉ का राष्ट्रपति मुस्लिम ही होगा। वर्तमान में सीरिया का आधिकारिक नाम 'सीरियन अरब रिपब्लिक गणराज्य' है जो पूर्वी मध्य सागरीय तट पर स्थित है, जिसके उत्तर में तुर्की, पूर्व में ईराक, पश्चिम में लेबनॉन तथा दक्षिण में जॉर्डन स्थित है। सीरिया की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या दमिश्क और अलैप्पो में निवास करती है जो सीरिया के प्रमुख शहर हैं। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद 1970 से सीरिया में स्थायी शासन व्यवस्था देखने को मिली जो असद वंश के हाथों में रही तथा 1970 में हाफिज–अल–असद प्रथम राष्ट्रपति बने जो 2000 तक अपने पद पर रहे, इनकी मृत्यु के बाद इनके पुत्र बशर–अल–असद को राष्ट्रपति बनाया गया जो वर्तमान में सीरिया का कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

सीरिया का इतिहास– सीरिया के इतिहास में इसके क्षेत्र का विकास सम्मलित है जो सीरिया को अरब गणराज्य के रूप में दर्शाता है। सीरिया के इतिहास को दो भागो में विभाजित किया जा सकता है।

प्राचीन इतिहास– प्राचीन सीरिया में प्रमुख रूप से दो बढे शहरों के नाम सम्मलित हैं ये दो शहर मारी और ऐबला थे। इन दोनों शहरों ने सुबेरियन लिपि का प्रयोग किया तथा ये लोग सुमेरियन देवताओं की पूजा करने लगे धीरे धीरे ये शहर विकसित होने लगे और इसको असीरिया नाम मिला। 612 ई.पूर्व असीरियन साम्राज्य का पतन होने लगा 332 ई.पूर्व सिकंदर महान ने सीरिया पर विजय प्राप्त कर ली। सिकंदर की मृत्यु के बाद पोम्पी महान ने सीरिया को अपने नियंत्रण में कर लिया और इस

तरह सीरिया रोमन साम्राज्य के नियंत्रण में आ गया। सीरिया रोमन साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया धीरे धीरे रोमन साम्राज्य का पतन होने लगा और अब सीरिया बीजान्टिक का एक भाग बन गया था उसी समय 7 वी शताब्दी में इस्लाम इस क्षेत्र में फैलने लगा जिसमें ओटोमन साम्राज्य का विस्तार होने लगा और इसने बीजान्टिक सैनिको को हरा कर दमिश्क को राजधानी बनाया और एक नयी मुस्लिम सरकार का सीरिया में स्वागत हुआ इस तरह 1516 में सीरिया में ओटोमन साम्राज्य का आधिपत्य हो गया परन्तु प्रथम विश्व युद्ध के दौरान साइकस पिकाट समझौता किया गया जिसके फलस्वरूप ओटोमन साम्राज्य को गुप्त रूप से विभाजित कर दिया 1918 में ब्रिटिश सैनिको ने अलेप्पो और दमिश्क पर अपना कब्जा कर लिया। 1919 में सीरिया कुछ समय के लिए अमीर फैजल के हाथों में आ गया जो हाशेमी साम्राज्य का शासक था। अमीर फैजल आगे चलकर ईराक का राजा बना। सीरिया में इसका शासन कुछ ही महीनों के लिए रहा क्योंकि सीरियन अरब सेना और फ्रांसीसी सेना के मध्य मेसलून का युद्ध शुरु हो गया और जिसमें हाशेमी राजवंश की पराजय हुई तथा फ्रांस की सेना ने सीरिया पर अपना आधिपत्य कर लिया जिसके कारण अमीर फैजल को सीरिया छोडना पडा। इस तरह 1920 में सीरिया फ्रांस के नियंत्रण में चला गया सीरिया ने फ्रांस से स्वतंत्र होने के अनेक प्रयास किये परन्तु सफल न हो सका। अपने अनेक प्रयासों के बाद सीरिया और फ्रांस आपसी वार्तालाप के निर्णय पर पहुंचे और 1936 में सीरिया और फ्रांस के मध्य एक समझौता हुआ जिसमें फ्रांस ने सीरिया को मुक्त करने का आश्वासन दिया परन्तु फ्रांस की विधायिका ने इस संधि को अस्वीकार कर दिया। 1941 व 1945 में सीरिया ने पुनः स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी जिससे फ्रांसीसी सैनिकों ने सीरिया पर हमला कर दिया जिसमें सीरिया के लगभग 400 नागरिक मारे गये। लगातार सीरिया के राष्ट्रीय दलों का दबाव फ्रांस पर बनता गया जिसके चलते 1 अप्रैल 1946 को सीरिया आधिकारिक रुप से स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया।

आधुनिक इतिहास– सीरिया के स्वतंत्र राष्ट्र घोषित होते ही वहॉ पर सेना का नियंत्रण हो गया। दूसरी ओर नव गठित राज्य सीरिया के पडोसी इजराइल जो यहूदियों का एक प्रमुख अरब देश था और उस क्षेत्र में पहले से ही समृद्ध बना हुआ था। सीरिया का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरना उसके लिए खतरा बन सकता था इसलिए सैन्य नियंत्रित सीरिया में इजराइल ने अपना पहला हमला किया जिसका

*Corresponding Author: रचना चौधरी

सामना नव निर्मित सीरिया की सेना ने किया परन्तु विफल रही। इस हमले के बाद सीरिया एवं इजराइल दोनों देशों के प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र की महासभा में मिले जहॉ आपस में बात करके शान्ति की बात हुई। दूसरी ओर सीरिया में सेना के नियंत्रण हटा कर 1949 में अदीब अल शिशकली का शासन आया जो फरवरी 1954 तक सत्ता में रहा। 1970 में सीरिया को एक शासक मिला जो सीरिया को स्थिरता प्रदान कर विकास की और ले गया ,हाफिज–अल असद ने 1970 में राष्ट्रपति पद प्राप्त किया और बाथ दल का समर्थन किया। इन्होने सीरिया को इस्लाम के साथ एक धर्मनिरपेक्ष समाजवादी के रूप में घोषित किया। 6 अक्टूबर 1973 को सीरिया ने मिश्र के साथ मिलकर इजराइल पर हमला कर दिया इसके साथ ही सीरिया ने गोलन हाइट्स क्षेत्र पर हमला कर दिया जो इजराइल के क्षेत्र में था। परिणामस्वरूप इजराइल लगातार गोलन हाइट्स क्षेत्र को आजाद कराने के लिए लड़ता रहा। 1975 असद ने इजराइल के साथ शांति बनाये रखने की बात की। इजराइल, ईराक एवं ईरान ये देश सीरिया के पडोसी देश है और इसी कारण इनके मध्य सम्बन्धों में उतार–चढाव की स्थिति बनी रहती है। 1980 के आसपास ईरान और इराक के मध्य युद्ध शुरू हो गया इस युद्ध में हाफिस– अल असद ने ईरान का समर्थन किया जब 1990 में इराक ने कुवैत पर हमला कर दिया था तब सीरिया अमेरिकी नेतृत्व के गठबंधन में शामिल हो गया और इस गठबंधन में शामिल होने के कारण सीरिया के अमेरिका और अन्य अरब राष्ट्रों के साथ बेहतर सम्बन्ध बन गए।

सीरियाः बशर–अल–असद के शासन काल में

2000 में हाफिज अल असद की मृत्यु के बाद उनके पुत्र बशर अल असद सीरिया के राष्ट्रपति चुने गए। असद ने सत्ता में आते ही अपने कार्यकाल के शुरूआती 3 साल इराक युद्ध और क्षेत्रीय हस्तक्षेप से मध्य पूर्व में जो शांति प्रक्रिया थी वो खत्म होने लगी। अपना पद ग्रहण करते समय राष्ट्रपति असद ने यह स्पष्ट रूप से कह दिया था की उनकी प्राथमिकितायें विदेश नीति की अपेक्षा घरेलू स्तर पर अधिक रहेंगी। इस शासन काल में सीरिया के अंतर्राष्ट्रीय संबन्धों में सुधार आया और 2006 में ईराक और सीरिया के आपसी संबन्ध बेहतर हुए। इसके बाद 2007 में यूरोपियन यूनीयन देशों के साथ संवाद

*Corresponding Author: रचना चौधरी

शुरु हुआ। अपने शासन काल में बशर अल असद ने सीरिया को क्षेत्रीय स्तर पर मजबूत बनाया तथा 2008 में असद ने इजराइल के साथ शान्ति पर बल दिया।

गृहयुद्ध की शुरूआत– हाफिज अल असद की मृत्यु के बाद बशर अल असद को राष्ट्रपति बनाया जाना था परन्तु उस समय पर असद की आयु 34 वर्ष थी जो राष्ट्रपति पद के लिए पर्याप्त नहीं थी इसलिए संविधान में संशोधन किया गया जिससे राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार की आयु 40 से 34 कर दी गयी और असद को राष्ट्रपति के लिए चुना गया। इधर सीरिया का एक समूह इस संशोधन के खिलाफ आवाज उठाने लगा और यह जनसमूह धीरे धीरे उग्र होता गया यही से सीरिया में राष्ट्रपति असद के विरुद्ध विद्रोह उत्पन्न हो गया यह विद्रोह अरब स्प्रिंग का परिणाम था जो 2010 में सबसे पहले ट्यूनीशिया में शुरू हुई जो तानाशाही के खिलाफ विद्रोह था। सीरिया में यह विद्रोह शहर दर्रा से शुरू हुआ जब एक स्कूल के कुछ छात्रों ने शहर की दीवारों पर सरकार विरोधी चित्र बनाए और असद की सेना ने इसके विरोध में बच्चों के समूह पर हमला कर दिया। लोगों ने असद की सेना पर यह आराप लगाये कि उनके द्वारा बच्चों को प्रताडित किया गया जिसमें 13 साल का बच्चा हमजा अल खतीब की मौत हो गई। यहीं से इस विद्रोह ने हिंसात्मक रूप ले लिया और सरकार के खिलाफ हिंसात्मक विद्रोह शुरू कर दिया। यह विद्रोह और भी भयानक हो गया जब जून 2014 में आतंकी संगठन ISIS ने सीरिया में हमला कर दिया। लोग सीरिया से पलायन करने लगे लगभग 13 मिलियन लोगों ने सीरिया से पलायन कर दिया जबकि ऑकडे यह दर्शाते हैं कि 2014 में 100,000 से अधिक लोगों की मौत हो गयी। 2016 के आंकडों के अनुसार सीरिया के 13.5 मिलियन लोगों को मानवीय सहायता की आवश्यकता है जिसमें से 6 मिलियन संख्या तो सिर्फ बच्चों की है। इस गृहयुद्ध से सीरिया लगभग समाप्त हो गया है परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय अभी भी इसका कोई स्पष्ट समाधान नहीं निकाल पाया है।

सीरिया में वर्तमान स्थिति– वर्तमान में सीरिया ऐसी परिस्थितियों में है जिसके कारण देश की राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था जटिलता की ओर बढती जा रही है तथा इस गृहयुद्ध के कारण सीरिया के शहर दर्रा, रक्का, इदिलिब, होम्स आदि शहरों में विद्रोह का प्रभाव आज भी देखा जा सकता

*Corresponding Author: रचना चौधरी

है जहॉ की आधे से अधिक जनसंख्या शरणार्थी बनी हुई है। UNHCR(united nstions high commission for refugees) के अनुसार सन् 2015 में लगभग 900,000 शरणार्थी यूरोप में बस गए। गृहयुद्ध के चलते वहॉ अमेरिका और रूस का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, अमेरिका ने सीरिया से आई.एस.आई.एस को नष्ट करने के प्रयास में सीरिया में अपना सैन्य हस्तक्षेप शुरू कर दिया जिसके कारण सीरिया के कुछ शहर जैसे हामा, दर्रा आई.एस मुक्त हुए। वर्तमान में इस गृहयुद्ध के साथ विश्व जैसे दो समूहों में विभाजित हो गया है, एक और अमेरिका के समर्थक देश हैं तो वही दूसरी और रूस के समर्थक देश हैं जिन्होंने इस गृहयुद्ध को बहुत जटिल बना दिया।

राष्ट्रपति असद के विरोधी समूह–

अमेरिका – सीरिया में गृहयुद्ध के समय से ही अमेरिका ने इसकी आलोचना की है क्योंकि अमेरिका का ऐसा मानना था कि असद जिस तरह सीरिया के लोगों पर रासायनिक हमले कर रहे हैं वो निकट भविष्य में उनकी सरकार के लिए नकारात्मक हो सकता है क्योंकि जनता में उनकी सरकार के प्रति विद्रोह की भावना है ऐसे में असद की सरकार द्वारा लिया गया कोई भी गलत फैसला उनकी सरकार के लिए घातक सिद्ध होगा।

कतर – कतर मध्य पूर्व में स्थित तथा फारस की खाडी का एक देश है, यह सऊदी अरब और ईरान के मध्य में स्थित है। सितम्बर 2008 कतर सरकार ने अरब लीग का प्रतिनिधित्व किया और सीरिया भी इस लीग का सदस्य था तथा यहीं से दोनो देशों के मध्य सम्बन्ध बने जो सीरिया में गृहयुद्ध होने से पहले तक मधुर थे परन्तु गृहयुद्ध के दौरान बशर अल असद की नीतियां जो हिंसात्मक थी उनकी कतर आलोचना की और सीरिया के खिलाफ अपना व्यवहार बदला तथा सीरिया के दमिश्क से अपने दूतावास को बंद कर दिया और ऐसा करने वाला कतर पहला देश बन गया।

तुर्की – हाफिज अल असद के शासन के शुरूआती काल में सीरिया और तुर्की के सम्बन्ध अच्छे थे

परन्तु इसमें गिरावट तब आयी जब यूफ्रेटस नदी के पानी के बंटवारे के मुद्दा उठा और सीरिया ने कुर्दों के संगठन PKK(Partia karkeren Kurdistan-kurdistan workers party) का समर्थन किया। जुलाई 1987 में एक समझौता हुआ जो सीरिया के प्रधानमंत्री ओजल के द्वारा तुर्की की यात्रा के दौरान किया गया था जिसके तहत तुर्की अपने यूफ्रेटस नदी जो उसके देश से होकर गुजरती थी उसका आधा पानी कुर्दों को देने की गारन्टी देगा और इसके बाद 1990 में अतातुर्क बांध को भरने के लिए यूफ्रेटस का तुर्की से डाइवर्जन किया गया। तुर्की सरकार ने गृहयुद्ध के समय से ही राष्ट्रपति असद की आलोचना की है लेकिन उसके बाद भी सीरिया के शरणार्थियों को सबसे अधिक तुर्की सरकार ने ही शरण दी हैं। तुर्की में 2.8 मिलियन सीरिया के लोग रह रहे हैं।

राष्ट्रपति असद के समर्थक समूह–

ईरान – ईरान और सीरिया के मध्य राजनीतिक सम्बन्ध 1979 से 1982 के बीच विकसित हुए जब 1979 में ईरान के शासन में परिवर्तन आया जब 1925 से चले आ रहे पहलवी राजवंश का अंत हुआ और ईरान में नयी सरकार का गठन हुआ जिसकी मान्यता देने वाला सीरिया पहला देश बना क्योंकि सीरिया के सम्बन्ध ईराक और इजराइल के साथ सम्बन्धों में अनबन बनी रहती है जिसके कारण सीरिया ने ईरान को अपने क्षेत्रीय भूमिका को मजबूत करने के रूप में देखा। ईरान के भी पश्चिमी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध नहीं थे और उसको भी सीरिया जैसे सहयोगी देश की आवश्यकता थी। गृहयुद्ध के दौरान ईरान ने सीरिया में आई.एस.आई.एस. का विरोध किया क्योकि ईरान में शियाओं की सरकार है और शिया बहुमत देश है वही सीरिया में राष्ट्रपति असद भी शिया संप्रदाय से ही इसलिये भी ये दोनों देश सुन्नी विचारधारा के विरोधी हैं।

Syrian Arab Republic- इस संगठन का गठन असद सरकार द्वारा सन् 2000 में किया गया था जो उनकी सरकार का ही एक अंग है। गृहयुद्ध के दौरान उनके इस दल के सदस्यों ने असद के समर्थन में सक्रिय भूमिका निभाई।

निष्कर्ष– सीरिया गृहयुद्ध जो 2011 में शुरू हुआ था आज लगभग 10 साल होने जा रहे हैं परन्तु इसका कोई ठोस समाधान नहीं निकल पाया है। सीरिया संकट आज वैश्विक स्तर पर एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है सीरिया की सरकार और वहां की जनता के मध्य उत्पन्न आतंरिक विद्रोह ने इतना गंभीर रूप ले लिया कि सीरिया की जनता सीरिया से पलायन को मजबूर हो गयी। असद वंश ने सीरिया से बहुदलीय व्यवस्था को समाप्त करके एक दलीय व्यवस्था शुरू की जिसमे बाथ दल प्रभुत्व में था। विरोधयों का मानना था कि असद अपने राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे और बाथ दल का अंत हो जिससे सीरिया में शासन करने का अवसर अन्य दलों को भी मिले। शुरुआत में यह विद्रोह शांतिपूर्वक तरीको से शुरू हुआ परतुं जैसे ही सरकार ने लोगो पर हमले किये विद्रोह ने उग्र रूप ले लिया। आतंरिक गृहयुद्ध में सीरिया पूरी तरह तबाह होता हुआ दिख रहा था और इसी का लाभ उठाते हुए आतंकी संगठन आई.एस.आई.एस ने सीरिया में अपना वर्चश्व कायम करना शरू कर दिया। सीरिया संकट का प्रभाव पूरे मध्य पूर्व में पड़ता दिख रहा है। सीरिया के आसपास के क्षेत्रों में आतंकी संगठन का खौफ बढ़ता जा रहा है और वहां से भी लोग पलायन करते दिख है और यूरोपियन देशो में शरण ले रहे हैं। वर्तमान में हम देख रहे है की विश्व के सभी देश आतंकवाद के खिलाफ खड़े है। विश्व में आतंकवाद को तभी समाप्त किया जा सकता है जब विश्व के सभी देश एकजुट हो जाएं और आई.एस.आई.एस के रूप में उभरते हुए दुनियां के सबसे बडे आतंकी खतरे के खिलाफ शक्तिशाली देशो से एकजुट होने की अपेक्षा की भी जाती है। जिस तरह से आतंकवाद बढ़ता जा रहा है उससे जहन में एक ही बात उठती है कि क्या हम आतंकवाद के बढ़ते हुए खतरे विशेष तौर पर आई.एस.आई.एस की चुनौती स्वीकार करने के लिए तैयार हैं ? इस बात का उत्तर हाँ में देना बहुत मुश्किल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Bryce(2014),'Ancient Syria;thousand year history,Oxford university press,United Kingdom.
2. Dhingra&Katariya (2017),'Tomahawks Over Syria;Final trailer of third world war',Manakin press,New Delhi.
3. Dark(2010),'Syria',Bradt travel guides Ltd,USA.
4. Dagher(2019),'Assad or we burn the country:how one family's lust for power destroyed Syria,'little brown compony,New York.
5. Dhingra & kataria(2017),'Tomhawks over Syria:Final trailer of third world war.'manakin press.New Delhi.
6. Eid k (2018),'my country;a syrian memoir,Bloomsbury publishing.
7. Ferris&Kirisci(2016),'The consequence of chaos:Syria's humanitarian crisis and the failure to protect',The brooking institution press,Washington,D.C.

*Corresponding Author: रचना चौधरी

8. Martin(2019),'The Syrian civil war',Capstone global library limited.

9. McHugo(2015)'Syria:A recent history',Saqi publication,London.

10. Perthese(2014),'Syria under bushar al assad:Modernisation and the limits of change', Routledge taylor & Francis group,New York.

11. Hinnebusch & Tur(2016)'Turkey-Syria relation:Between enmity and amity',Routle-ledge taylor & Francis group,London and New York.

12. Warrick(2015),'Black flags:The rise of ISIS',Penguin random house LLC,New York.